International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281 Volume 2, Issue 9, September 2019
https://doi.org/10.31426/ijamsr.2019.2.9.1916

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के विकास में सामाजिक एवं राजनीतिक संगठनों की भूमिका

Ram Ratan
Research Scholar, Department of Arts & Social Sciences, North East Frontier Technical University, Arunachal Pradesh.

Dr. Abha B Shah
Asst. Professor, Department of Arts & Social Sciences, North East Frontier Technical University, Arunachal Pradesh.

सार

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के विकास में सामाजिक एवं राजनीतिक संगठनों की भूमिका प्रभावशाली और गहराई से प्रभावशाली रही। ब्रह्मो समाज और आर्य समाज जैसे सामाजिक संगठनों ने समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने और शिक्षा तथा समानता को बढ़ावा देने का कार्य किया, जिससे लोगों में जागरूकता और आत्मसम्मान की भावना विकसित हुई। यह सामाजिक जागरूकता आगे बढ़ती राष्ट्रीय चेतना में परिवर्तित हुई, जिसने स्वतंत्रता आंदोलन को वैचारिक आधार प्रदान किया। राजनीतिक स्तर पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने विभिन्न निकायों और क्षेत्रों के लोगों को एक मंच पर लाकर राष्ट्रीय एकता को घोषित किया। इस संगठन ने शुरुआत में संवैधानिक उपायों के माध्यम से अपने अधिकारों की मांग की, लेकिन समय के साथ यह जनआंदोलनों का नेतृत्व करने लगा। इसके परिणामस्वरूप आंदोलन अधिक संगठित और व्यापक हुआ। वहीं ऑल इंडिया मुस्लिम लीग ने मुस्लिम समुदाय के हितों का प्रतिनिधित्व करते हुए आंदोलन में विविधता लाई, लेकिन इसकी साम्प्रदायिक राजनीति ने राष्ट्रीय एकता को चुनौती भी दी। इसी प्रकार होम रूल लीग ने "स्वराज" की अवधारणा को लोकप्रिय बनाकर आंदोलन को नई दिशा दी और जनता को सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया।

मुख्य शब्दः *भारतीय, राष्ट्रीय, आंदोलन, विकास, सामाजिक, राजनीतिक, संगठनों.*

परिचय

आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद बुनियादी तौर पर विदेशी आधिपत्य की चुनौती के जवाब रूप में उदित हुआ। स्वयं ब्रिटिश शासन की परिस्थितियों ने भारतीय जनता में राष्ट्रीय भावना विकसित करने में सहायता दी। ब्रिटिश शासन तथा उसके प्रत्यक्ष और परोक्ष परिणामों ने ही भारत में राष्ट्रीय आंदोलन के विकास के लिए भौतिक, नैतिक और बौद्धिक परिस्थितियां तैयार की।

इस आंदोलन की जड़े भारतीय जनता के हितों तथा मानव में ब्रिटिश हितों के टकराव में थी। अंग्रेजों ने अपने हितों को पूरा करने के लिए ही भारत को अधीन बनाया था और इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर वे भारत का शासन चलाते थे वे अक्सर ब्रिटेन के लाभ के लिए भारतीयों की भलाई को ध्यान में नहीं रखते थे। धीरे-धीरे भारतीयों ने अनुभव किया कि लंकाशायर के उद्योगपतियों तथा अंग्रेजों के दूसरे प्रमुख वर्गों के हितों के लिए उनके अपने हितों का बलिदान दिया जा रहा है।

स्वयं ब्रिटिश शासन भारत के आर्थिक पिछड़ेपन का प्रमुख कारण बनता गया और भारत में राष्ट्रीय आंदोलन का आधार यही तथ्य था। यह भारत के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक तथा राजनीतिक विकास में प्रमुख बाधक तत्त्व बन चुका था। इससे भी बड़ी बात यह है कि अधिक संख्या में भारतीय इस तथ्य को स्वीकार करने

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

लगे थे और उनकी यह संख्या बढ़ती जा रही थी। आगे चलकर बीसवीं शताब्दी में आधुनिक कारखानों, खदानों तथा बागानों के मजदूरों ने भी पाया कि सारी जुबानी हमदर्दी के बावजूद सरकार पूंजीपतियों का, खासकर विदेशी पूंजीपतियों का ही साथ देती थी। जब कभी मजदूर ट्रेड यूनियन बनाने तथा हड़तालों, प्रदर्शनों और दूसरे संघर्षो के द्वारा अपनी स्थिति को सुधारने के प्रयत्न करते, सरकार का पूरा तंत्र उनके खिलाफ उठ खड़ा होता । इसके अलावा उन्होंने यह भी महसूस किया कि बढ़ती बेरोजगारी का समाधान केवल तीव्र औद्योगीकरण से संभव है और यह कार्य केवल एक स्वाधीन सरकार कर सकती है।

देश का प्रशासकीय और आर्थिक एकीकरण

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में भारत का एकीकरण हो चुका था और वह एक राष्ट्र के रूप में उभर चुका था। इसलिए भारतीय जनता में राष्ट्रीय भावनाओं का विकास आसानी से हुआ। अंग्रेजों ने धीरे-धीरे पूरे देश में सरकार की एकसमान, आधुनिक प्रणाली लागू कर दी थी और इस तरह इसका प्रशासकीय एकीकरण हो चुका था। ग्रामीण और स्थानीय आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था के विनाश तथा अखिल भारतीय पैमाने पर आधुनिक व्यापार तथा उद्योग की स्थापना के कारण भारत का आर्थिक जीवन निरंतर एक इकाई के रूप में ढलता चला गया तथा देश के विभिन्न भागों में रहने वाले लोगों के आर्थिक हित परस्पर संबद्ध हुए। उदाहरण के लिए, भारत के किसी एक भाग में अकाल पड़ता या वस्तुओं की कमी होती तो दूसरे सभी भागों में भी खाद्य सामग्री की कीमतों तथा उपलब्धता पर उसका प्रभाव पड़ता था। इसके अलावा, रेलवे, तार, तथा एकीकृत डाक व्यवस्था के समारंभ ने भी देश को एकजूट बना दिया था और जनता, खासकर नेताओं के पारस्परिक संपर्क को बढ़ावा दिया था।

इस सिलसिले में भी, विदेशी शासन का अस्तित्व ही एकता का कारण बन गया, क्योंकि यह शासन सामाजिक वर्ग, जाति, धर्म या क्षेत्र का भेद किए बिना पूरी भारतीय जनता का दमन करता था। पूरे देश के लोगों ने देखा कि वे एक ही शत्रु अर्थात् ब्रिटिश शासन, के हाथों पीड़ित थे। एक तरफ तो यह भारतीय राष्ट्रवाद के उदय का एक प्रमुख कारण बन गया और दूसरी तरफ साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष तथा उस संघर्ष के दौरान उपजी एकजूटता की भावना ने भारतीय राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

पश्चिमी विचार और शिक्षा

उन्नीसवीं सदी में आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा और विचारधारा के प्रचार के फलस्वरूप बहुत बड़ी संख्या में भारतीयों ने एक आधुनिक, बुद्धिसंगत, धर्मनिरपेक्ष, जनतांत्रिक तथा राष्ट्रवादी राजनीतिक दृष्टिकोण अपनाया। वे यूरोपीय राष्ट्रों के समसामयिक राष्ट्रवादी आंदोलनों का अध्ययन, उसकी प्रशंसा तथा उनका अनुकरण करने के प्रयत्न भी करने लगे। रूसो, पेन, जॉन स्टुअर्ट मिल तथा दूसरे पाश्चात्य विचारक उनके राजनीतिक मार्गदर्शक बन गए जबकि मैजिनी, गैरीबाल्डी तथा आयरलैंड के राष्ट्रवादी नेता उनके राजनीतिक आदर्श हो गए।

विदेशी दासता के अपमान की चुभन को सबसे पहले इन्हीं शिक्षित भारतीयों ने महसूस किया। विचारों से आधुनिक बनकर इन लोगों ने विदेशी शासन की बुराईयों के अध्ययन की योग्यता भी प्राप्त कर ली। उन्हें एक आधुनिक, मजबूत, समृद्ध और एकताबद्ध भारत की कल्पना से प्रेरणा प्राप्त होती रही। कालांतर में, इन्हीं में से बेहतरीन लोग राष्ट्रीय आंदोलन के नेता और संगठनकर्त्ता बने।

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

हमें यह बात स्पष्ट रूप से समझ लेनी चाहिए कि राष्ट्रीय आंदोलन आधुनिक शिक्षा प्रणाली की उपज नहीं था, बल्कि वह ब्रिटेन तथा भारत के हितों के टकराव से उत्पन्न हुआ था। इस प्रणाली ने शिक्षित भारतीयों को पाश्चात्य विचार अपनाकर राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व संभालने तथा उसे एक जनतांत्रिक और आधुनिक दिशा देने में समर्थ बनाया। वास्तविकता यह है कि स्कूलों तथा कॉलेजों में अधिकारीगण विदेशी शासन के प्रति विनम्रता और सेवा का भाव ही जगाने के प्रयत्न करते थे। राष्ट्रवादी विचार तो आधुनिक विचारों के सामान्य प्रसार के कारण आए। चीन तथा इंडोनेशिया जैसे दूसरे एशियाई देशों में तथा पूरे अफ्रीका में भी आधुनिक और राष्ट्रवादी विचार फैले हालांकि वहां आधुनिक स्कूलों और कॉलेजों की संख्या बहुत ही कम थी।

राष्ट्रीय आंदोलन में प्रमुख संगठनों का योगदान:

- **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (1885):** ए.ओ. ह्यूम द्वारा स्थापित, यह अखिल भारतीय स्तर पर राष्ट्रीय एकता और संवैधानिक सुधारों की मांग करने वाला मुख्य मंच बना, जिसने स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व किया।
- **सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलन:** ब्रह्म समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन जैसे संगठनों ने शिक्षा, छुआछूत विरोधी आंदोलन और महिला सशक्तिकरण के माध्यम से भारतीय समाज में आत्म-सम्मान जगाया।
- **प्रारंभिक राजनीतिक संस्थाएं:** पूना सार्वजनिक सभा (1870), इंडियन एसोसिएशन (1876), मद्रास महाजन सभा (1884), और बॉम्बे प्रेसीडेंसी एसोसिएशन (1885) ने स्थानीय स्तर पर राजनीतिक चेतना का प्रसार किया।
- **क्रांतिकारी संगठन:** गरमपंथी विचारधारा (लाल-बाल-पाल) और बाद में अनुशीलन समिति, गदर पार्टी, और हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन ने सशस्त्र संघर्ष के माध्यम से युवाओं को प्रेरित किया।
- **गांधीवादी आंदोलन:** महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने असहयोग, सविनय अवज्ञा, और भारत छोड़ो आंदोलन के माध्यम से जन-आंदोलन का रूप लिया, जिसमें किसान, मजदूर और महिलाएं शामिल हुईं।

सामाजिक-राजनीतिक संगठनों का प्रभाव:

- **राष्ट्रवाद का प्रसार:** प्रेस और स्थानीय संगठनों ने अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त मध्यम वर्ग से निकलकर आंदोलन को आम जनता तक पहुँचाया।
- **सामाजिक न्याय:** दलित और पिछड़ों के अधिकारों के लिए सामाजिक आंदोलनों ने (अंबेडकर के नेतृत्व में) राष्ट्रीय आंदोलन को अधिक समावेशी बनाया।
- **संवैधानिक दबाव:** कांग्रेस ने शुरुआत में संवैधानिक तरीकों से और बाद में स्वतंत्रता की सीधी मांग रखकर ब्रिटिश शासन को झुकने पर मजबूर किया।

अध्ययन के उद्देश्य

1. देश का प्रशासकीय और आर्थिक एकीकरण का अध्ययन
2. राष्ट्रीय आंदोलन में प्रमुख संगठनों के योगदान का अध्ययन

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

अनुसंधान विधि

इस अध्ययन में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के विकास में सामाजिक एवं राजनीतिक संगठनों की भूमिका का विश्लेषण करने के लिए मुख्यतः उपलब्ध एवं ऐतिहासिक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। यह अध्ययन वर्णनात्मक और संख्यात्मक प्रकृति का है, जिसमें अतीत की घटनाएं, संख्यात्मक और संगठनों के योगदान को समझने का प्रयास किया गया है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए विभिन्न समय अवधियों में संगठनों की भूमिका का क्रमबद्ध अध्ययन किया गया है, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि राष्ट्रीय आंदोलन के विकास में इनका योगदान किस प्रकार परिवर्तित और उन्नत हुआ।

डेटा संग्रह के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में उस समय के सरकारी अभिलेख, नेताओं के भाषण, आकांक्षा, आत्मकथाएँ तथा समकालीन समाचार पत्र शामिल किए गए हैं, जो उस युग की वास्तविक परिस्थितियों को समझने में सहायक रहे हैं। द्वितीयक स्रोतों में विभिन्न इतिहासकारों द्वारा लिखित पुस्तकें, शोध पत्र, जर्नल लेख तथा संख्यात्मक अध्ययन शामिल हैं। इन स्रोतों के माध्यम से विषय को व्यापक और गहन दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन के अंतर्गत प्रमुख सामाजिक एवं राजनीतिक संगठनों को विश्लेषण की इकाइयों के रूप में पढ़ा गया है, जिनमें ब्रह्मो समाज, आर्य समाज, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, अखिल भारतीय मुस्लिम लीग तथा होम रूल लीग जैसे संगठन शामिल हैं। इन संगठनों के चयन का आधार उनका ऐतिहासिक महत्व, व्यापक प्रभाव तथा राष्ट्रीय आंदोलन में उनकी सक्रिय भागीदारी रहा है।

डेटा के विश्लेषण के लिए विषयवस्तु विश्लेषण, तुलनात्मक विश्लेषण तथा कालानुक्रमिक विश्लेषण लागू का उपयोग किया गया है। विषयवस्तु विश्लेषण के माध्यम से ऐतिहासिक स्रोतों और लेखों की सामग्री का गहन अध्ययन किया गया, जबकि तुलनात्मक विश्लेषण द्वारा विभिन्न संगठनों की संरचनाओं और योगदानों की तुलना की गई। कालानुक्रमिक विश्लेषण से यह समझने में सहायता मिली कि समय के साथ इन संगठनों की भूमिका और रणनीतियों में किस प्रकार परिवर्तन हुआ। इसके अतिरिक्त, विभिन्न इतिहासकारों के दृष्टिकोण में अंतर होने के कारण घटनाओं की व्याख्या में भिन्नता संभव है। फिर भी, उपलब्ध स्रोतों के पर्याप्त विश्लेषण के माध्यम से उपयोगी वस्तुनिष्ठ निष्कर्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

परिणाम और चर्चा

सामाजिक जागरूकता का विकास:

ब्रह्म समाज और आर्य समाज ने भारतीय समाज में सामाजिक जागरूकता के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन संगठनों के उद्भव से पहले भारतीय समाज अनेक कुरीतियों और रूढ़ियों से पीड़ित था, जिनमें सती प्रथा, बाल विवाह, जाति-भेद और महिलाओं की निम्न स्थिति प्रमुख थीं। इन समस्याओं के कारण समाज में असमानता और अज्ञानता का माहौल बना हुआ था। ऐसे समय में इन संगठनों ने सुधारवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए समाज को जागृत करने का प्रयास किया।

ब्रह्मो समाज ने विशेष रूप से धार्मिक अंधविश्वासों और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई तथा महिलाओं की स्थिति अनुचित, विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहित करने और शिक्षा के प्रसार पर जोर दिया। इसी प्रकार आर्य समाज ने वेदों की ओर लौटने का आह्वान करते हुए सामाजिक समानता, शिक्षा और स्वाभिमान को

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

बढ़ावा दिया। इस संगठन ने जाति प्रथा और सामाजिक भेदभाव के खिलाफ आंदोलन चलाकर समाज में समानता की भावना विकसित की।इन सुधार आंदोलनों के परिणामस्वरूप भारतीय समाज में एक नई चेतना का विकास हुआ। लोगों ने अपनी सामाजिक स्थिति और अधिकारों के प्रति जागरूक होना शुरू किया। शिक्षा के प्रसार ने व्यक्तियों में तार्किक सोच और आत्मविश्वास को बढ़ाया, जिससे वे अन्याय और शोषण के खिलाफ आवाज उठाने लगे। यही जागरूकता आगे चलकर राष्ट्रीय चेतना में परिवर्तित हुई, जिसने भारतीयों को एकजुट होकर विदेशी शासन के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार, इन सामाजिक संगठनों ने न केवल समाज में सुधार किया, बल्कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के लिए एक मजबूत वैचारिक आधार भी तैयार किया।

राजनीतिक चेतना और संगठन:

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के विकास में राजनीतिक चेतना उत्पन्न करने और उसे संगठित रूप देने में केंद्रीय भूमिका निभाई। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब भारतीय समाज विभिन्न क्षेत्रों, जनजातियों और शरणार्थियों में बँटा हुआ था, तब इस संगठन ने एक साझा राजनीतिक मंच प्रदान किया, जहाँ देश के विभिन्न हिस्सों से आए नेता और प्रतिनिधि एकत्रित होकर राष्ट्रीय मुद्दों पर विचार-विमर्श कर सके। इससे भारतीयों में एकता और सामूहिक पहचान की भावना विकसित हुई।

इस संगठन ने शुरुआत में संवैधानिक और शांतिपूर्ण तरीकों से ब्रिटिश शासन के परिचय अपनी माँगें प्रस्तुत कीं, जैसे प्रशासन में भारतीयों की भागीदारी, नागरिक अधिकारों की रक्षा और आर्थिक शोषण का विरोध। समय के साथ, इसने जनआधारित आंदोलनों को भी आंदोलनों और स्वतंत्रता की मांग को व्यापक स्तर पर फैलाया। इसके माध्यम से भारतीय जनता को यह समझ में आया कि वे केवल संगठित प्रजा नहीं, बल्कि अधिकार वाले नागरिक हैं।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने न केवल राजनीतिक नेतृत्व प्रदान किया, बल्कि जनता में जागरूकता फैलाने का भी कार्य किया। इसके अधिवेशनों, समझौतों और आंदोलनों के माध्यम से लोगों को उनके अधिकार, कर्तव्य और राष्ट्रीय हितों के प्रति जागरूक किया गया। परिणामस्वरूप, भारतीय समाज में राजनीतिक चेतना का तेजी से विस्तार हुआ, जिसने स्वतंत्रता संग्राम को मजबूत और संगठित दिशा प्रदान की।

विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व:

ऑल इंडिया मुस्लिम लीग ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान मुस्लिम समुदाय के हितों और राजनीतिक आकांक्षाओं को सामने लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उस समय यह महसूस किया जा रहा था कि सभी समुदायों के हित समान रूप से प्रतिनिधित्व नहीं पा रहे हैं, इसलिए इस संगठन का गठन मुस्लिम समाज को एक सशक्त राजनीतिक मंच देने के उद्देश्य से किया गया। इसके माध्यम से मुस्लिम समुदाय ने अपनी सामाजिक, शैक्षिक और राजनीतिक संगठनों को संगठित रूप में व्यक्त किया और औपनिवेशिक शासन के संदर्भ में अपनी स्थिति को स्पष्ट किया।

इस संगठन की सक्रियता से राष्ट्रीय आंदोलन में विविधता और बहुलता का समावेश हुआ, क्योंकि विभिन्न निकायों और समुदायों की आवाजें अब अधिक स्पष्ट रूप से सामने आने लगीं। इससे यह भी स्पष्ट हुआ कि भारत एक बहु-सांस्कृतिक और बहु-धार्मिक समाज है, जहाँ अलग-अलग समूहों की आवश्यकताएं और दृष्टिकोण भिन्न हो सकते हैं।

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

हालांकि, समय के साथ ऑल इंडिया मुस्लिम लीग की राजनीति अधिकाधिक साम्प्रदायिक आधार पर केंद्रित होती गई, जिससे हिंदू और मुस्लिम समुदायों के बीच अंतर बढ़ने लगे। इसने राष्ट्रीय एकता को चुनौती दी और राजनीतिक विभाजन की प्रवृत्ति को जन्म दिया, जिसका प्रभाव आगे बढ़ता भारत के विभाजन के रूप में भी देखा गया। इस प्रकार, इस संगठन ने जहाँ एक ओर प्रतिनिधित्व और विविधता को बढ़ावा दिया, वहीं दूसरी ओर साम्प्रदायिक विभाजन को भी प्रोत्साहित किया।

स्वशासन की मांग का विस्तार:

होम रूल लीग ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में स्वशासन की मांग को व्यापक रूप से फैलाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसका उद्देश्य भारत में ब्रिटिश शासन के भीतर ही स्वशासन (होम रूल) की स्थापना करना था, जिससे भारतीयों को अपने प्रशासन में अधिक अधिकार और भागीदारी मिल सके। इस संगठन ने "स्वराज" की अवधारणा को केवल नेताओं तक सीमित न करके आम जनता तक पहुंचाया, जिससे यह एक जनसामान्य की मांग बन गई।

इस आंदोलन ने लोगों के बीच राजनीतिक जागरूकता को बढ़ाया और उन्हें यह समझाया कि स्वशासन उनका अधिकार है, न कि कोई विशेष सुविधा। सभाओं, भाषणों, लेखों और प्रचार अभियानों के माध्यम से होम रूल लीग ने ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में लोगों को सक्रिय रूप से जोड़ा। इसके परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में लोग राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ने लगे और स्वतंत्रता की मांग अधिक सशक्त और संगठित रूप में सामने आई।

इस प्रकार, इस संगठन ने न केवल स्वराज की मांग को लोकप्रिय बनाया, बल्कि स्वतंत्रता आंदोलन को नई ऊर्जा और गति भी प्रदान की, जिससे आगे बढ़ने वाला यह आंदोलन और अधिक व्यापक एवं प्रभावशाली बन गया।

जनभागीदारी में वृद्धि:

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक संगठनों ने जनभागीदारी को व्यापक बनाने में निर्णायक भूमिका निभाई। प्रारंभिक चरण में यह आंदोलन मुख्यतः शिक्षित और उच्च वर्ग तक सीमित था, लेकिन समय के साथ इन संगठनों ने इसे समाज के हर वर्ग तक पहुँचाने का प्रयास किया। विशेष रूप से महिलाओं, किसानों और मजदूरों को आंदोलन से जोड़ना एक महत्वपूर्ण परिवर्तन था, जिसने स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दी।

महिलाओं की भागीदारी ने आंदोलन को सामाजिक और नैतिक शक्ति प्रदान की। वे केवल सहयोगी भूमिका तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि उन्होंने सक्रिय रूप से विरोध प्रदर्शनों, बहिष्कार आंदोलनों और जनजागरूकता अभियानों में भाग लिया। इसी प्रकार किसानों को जोड़ने से आंदोलन ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँचा और ब्रिटिश शासन की आर्थिक नीतियों के खिलाफ व्यापक असंतोष सामने आया। मजदूर वर्ग की भागीदारी ने औद्योगिक क्षेत्रों में आंदोलन को मजबूती दी और श्रमिक अधिकारों के मुद्दे भी राष्ट्रीय संघर्ष का हिस्सा बने।

इन प्रयासों के परिणामस्वरूप राष्ट्रीय आंदोलन केवल कुछ नेताओं या शहरी वर्ग तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह एक सशक्त जनआंदोलन में परिवर्तित हो गया। इससे स्वतंत्रता संग्राम को व्यापक समर्थन मिला और यह पूरे देश की सामूहिक चेतना का प्रतीक बन गया, जिसने अंततः स्वतंत्रता प्राप्ति के मार्ग को प्रशस्त किया।

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

राष्ट्रीय एकता और विभाजन का प्रभाव:

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक संगठनों ने एक ओर राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, तो दूसरी ओर कुछ परिस्थितियों में विभाजन की प्रवृत्तियों को भी जन्म दिया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जैसे संगठनों ने पूरे देश के लोगों को एक साझा मंच पर लाकर भाषा, क्षेत्र और वर्ग के भेदों से ऊपर उठने की प्रेरणा दी। इससे भारतीयों में एक राष्ट्रीय पहचान और सामूहिक चेतना का विकास हुआ, जिसने स्वतंत्रता आंदोलन को मजबूत आधार प्रदान किया।

हालांकि, समय के साथ कुछ संगठन अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की राजनीति में धार्मिक आधार अधिक प्रमुख हो गया। इससे विभिन्न समुदायों के बीच मतभेद बढ़ने लगे और राष्ट्रीय आंदोलन में साम्प्रदायिक तनाव की स्थिति उत्पन्न हुई। यह प्रवृत्ति आगे बढ़ती राजनीतिक विभाजन का कारण बनी, जिसने भारतीय समाज की एकता को चुनौती दी।

इस प्रकार, जहाँ एक ओर इन संगठनों ने राष्ट्रीय एकता को उजागर किया और स्वतंत्रता के लिए सामूहिक संघर्ष को प्रोत्साहित किया, वहीं दूसरी ओर धार्मिक आधार पर उभरती विभाजनकारी प्रवृत्तियों ने आंदोलन की दिशा को जटिल भी बनाया। यह द्वैत प्रभाव भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की एक महत्वपूर्ण विशेषता के रूप में देखा जा सकता है।

चर्चा

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के विकास में सामाजिक एवं राजनीतिक संगठनों की भूमिका प्रभावशाली और गहराई से प्रभावशाली रही। ब्रह्मो समाज और आर्य समाज जैसे सामाजिक संगठनों ने समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने और शिक्षा तथा समानता को बढ़ावा देने का कार्य किया, जिससे लोगों में जागरूकता और आत्मसम्मान की भावना विकसित हुई। यह सामाजिक जागरूकता आगे बढ़ती राष्ट्रीय चेतना में परिवर्तित हुई, जिसने स्वतंत्रता आंदोलन को वैचारिक आधार प्रदान किया। राजनीतिक स्तर पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने विभिन्न निकायों और क्षेत्रों के लोगों को एक मंच पर लाकर राष्ट्रीय एकता को घोषित किया। इस संगठन ने शुरुआत में संवैधानिक उपायों के माध्यम से अपने अधिकारों की मांग की, लेकिन समय के साथ यह जनआंदोलनों का नेतृत्व करने लगा। इसके परिणामस्वरूप आंदोलन अधिक संगठित और व्यापक हुआ। वहीं ऑल इंडिया मुस्लिम लीग ने मुस्लिम समुदाय के हितों का प्रतिनिधित्व करते हुए आंदोलन में विविधता लाई, लेकिन इसकी साम्प्रदायिक राजनीति ने राष्ट्रीय एकता को चुनौती भी दी। इसी प्रकार होम रूल लीग ने "स्वराज" की अवधारणा को लोकप्रिय बनाकर आंदोलन को नई दिशा दी और जनता को सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया। इन संगठनों के संयुक्त आंदोलनों से महिलाओं, किसानों और मजदूरों की भागीदारी बढ़ेगी, जिससे स्वतंत्रता आंदोलन एक व्यापक जनआंदोलन बन गया। हालांकि, इन आंदोलनों के साथ-साथ विभाजनकारी प्रवृत्तियाँ भी उभरीं, जिन्होंने आंदोलन को जटिल बनाया।

निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि सामाजिक एवं राजनीतिक संगठनों ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के विकास में केंद्रीय भूमिका निभाई। सामाजिक संगठनों ने जागरूकता, सुधार और समानता की नींव रखी, जबकि राजनीतिक संगठनों ने उस चेतना को संगठित रूप देकर स्वतंत्रता संग्राम को दिशा और गति प्रदान की। इन संगठनों ने न केवल राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ किया, बल्कि जनभागीदारी को भी बढ़ाया,

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

जिससे आंदोलन व्यापक और प्रभावी बना। हालांकि, कुछ संगठनों की नीतियों के कारण साम्प्रदायिक विभाजन की प्रवृत्तियाँ भी उभरीं, जिसने राष्ट्रीय आंदोलन को चुनौती दी। इसके बावजूद, इन संगठनों के समग्र योगदान ने भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति में निर्णायक भूमिका निभाई। अतः यह कहा जा सकता है कि सामाजिक और राजनीतिक संगठनों के संयुक्त प्रयासों ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को सशक्त, संगठित और सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संदर्भ

1. दत्त आर. सी. द इकोनॉमी हिस्ट्री ऑफ इंडिया अंडर अर्ली ब्रिटिश रूल, टुबनर एण्ड कंपनी, लंदन।
2. दत्त, आर. सी. इकोनॉमी हिस्ट्री ऑफ इंडिया इन द विक्टोरियन ऐज टुबनर एण्ड कंपनी, लंदन।
3. सिन्हा, एन. के. द इकोनॉमी हिस्ट्री ऑफ बंगालः फार्म प्लैसी टु द परमानेंट सेंटलमेंट, फर्मा के. एल. मुकोपाध्याय कलकत्ता ।
4. चंद्र विपन द राइस एण्ड ग्रोथ ऑफ इकोनॉमी नेशनलाइज्म इन मॉडर्न इंडिया, पिपुल्स पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली।
5. चन्द्र विपिन ईजी इन कोलोनाइलिज्म ओरियेन्ट लॉगमेन, न्यु दिल्ली।
6. कुमार, धर्मा, एण्ड राय चौधरी, तपन कैमब्रिज इकोनॉमी हिस्ट्री ऑफ इंडिया, वोल्यूम 2. कैमब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस कैमब्रिज ।
7. इस्लाम सिराज द परमानेंट सेटलमेंट इन बंगाल, 1793-1819 बंगला ऐकेडमी, डाका।
8. गोपाल एस. परमानेंट सेटलमेंट इन बंगाल एण्ड इटस रिजल्ट, जी. अलीन एण्ड अनवीन, लंदन।
9. बक्वी, ऐ. के. प्रोइवेट इनवेस्टमेन्ट इन इंडिया 1900-1939, कैमब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैमब्रिज।
10. थॉरनर, डाइनिल एण्ड थॉरनर, एलाइस लैंड एण्ड लेबर इन इंडिया, एशिया पब्लिसिंग हाउस, बम्बई
11. गदगिल, डी. आर. द इंडस्ट्रीयल इवोलुसन ऑफ इंडिया इन रिसेन्ट टाईम्स, ऑक्सफर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड।
12. दत्त आर. पालमी, इंडिया टुडे पीपुल्स पब्लिसिंग हाउस बम्बई।